संत तुकाराम

हाल ही में प्रधानमंत्री ने पुणे ज़िले के मंदिर शहर देहू में संत तुकाराम शिला मंदिर का उद्घाटन किया।

- शिला मंदिर एक पत्थर के स्लैब (शिला) को समर्पित मंदिर है जिस पर संत तुकाराम ने 13 दिनों तक ध्यान किया।
  - शिला एक चट्टान को संदर्भित करती है जो वर्तमान में देहु संस्थान मंदिर परिसर में स्थित है और सदियों से पंढरपुर की वार्षिक तीर्थयात्रा **वारी** का प्रारंभिक बिंदु रही है।
- जिस चट्टान पर उन्होंने 13 दिनों तक बैठकर ध्यान किया, वह पवित्र और वरकरी संप्रदाय के लिये तीर्थस्थल माना जाता है।

//

संत तुकाराम:

- **परिचय:**
  - संत तुकाराम एक वरकरी संत और कवि थे।
    - यह संप्रदाय पूरे महाराष्ट्र में फैला हुआ है और इसके केंद्र में संत तुकाराम एवं उनके कार्य हैं।
  - वह अभ्यंग भक्ति कविता और कीर्तन के नाम से उल्लेखनीय आध्यात्मिक गीतों के माध्यम से समुदाय-उन्मुख पूजा के लिये प्रसिद्ध थे।
  - इसके अलावा उन्होंने अभंग कविता नामक साहित्य की एक मराठी शैली की रचना की, जिसमें आध्यात्मिक विषयों के साथ-साथ लोक कहानियों को सम्मिलित किया गया है।
- **उनका दर्शन:**
  - तुकाराम ने अपने 'अभ्यंग' साहित्य में चार और लोगों का उल्लेख किया है, जिनका उनके आध्यात्मिक विकास पर बड़ा प्रभाव था- भक्ति संत नामदेव, ज्ञानेश्वर, कबीर एवं एकनाथ।
  - तुकाराम की शिक्षाओं को वेदांत आधारित माना जाता था।
- **सामाजिक सुधार:**
  - **जातिविहीन समाज के बारे में उनके संदेश के परिणामस्वरूप और अनुष्ठानों के** इनकार ने **सामाजिक आंदोलन को जन्म दिया था।**
  - उनके अभ्यंग, **समाज के ब्राह्मणवादी प्रभुत्व** के खिलाफ मज़बूत हथियार बन गए।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/sant-tukaram